मानव जीवन : ईश्वर की अमूल्य पूंजी

डॉ. मुकेश नायक

संत कबीरदास भारतीय संत परंपरा के ऐसे महान चिंतक थे जिन्होंने अत्यंत सरल भाषा में मानव जीवन के गहनतम आध्यात्मिक सत्य को व्यक्त किया. उनका प्रसिद्ध दोहा —

'कबीर पूंजी साह की, तूं जिनि खोवै ख्वार.
खरी बिगूचनि होइगी, लेखा देती बार॥'

आज के समय में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक दिखाई देता है. कबीरदास जी मनुष्य को यह स्मरण कराते हैं कि यह मानव जीवन, यह शरीर, यह चेतना और यह समय किसी व्यक्ति की निजी संपत्ति नहीं, बल्कि परमात्मा की दी हुई अमूल्य अमानत है. यह वह पूंजी है जिसे सही दिशा में उपयोग करने पर मनुष्य आत्मिक शांति, सदाचार और परम सत्य की प्राप्ति कर सकता है, लेकिन यदि वही पूंजी विषय-वासनाओं, अहंकार, लोभ, क्रोध और भौतिक अंधी दौड़ में नष्ट कर दी जाए, तो अंततः केवल पछतावा और पीड़ा ही शेष रह जाती है.

कबीर का दर्शन केवल सुनने या पढ़ने का विषय नहीं है, बल्कि जीवन में उतारने का संदेश है. आज समाज में आध्यात्मिकता की बातें बहुत होती हैं. लोग कहते हैं कि जीवन अनमोल है, ईश्वर सर्वत्र है और मानवता सबसे बड़ा धर्म है, लेकिन व्यवहार में मनुष्य का अधिकांश समय ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, दिखावे और स्वार्थ में व्यतीत हो रहा है. कथनी और करनी का यही अंतर कबीर की दृष्टि में सबसे बड़ा संकट है. वे चेतावनी देते हैं कि यदि मनुष्य की करनी उसके आध्यात्मिक बोध के अनुरूप नहीं हुई, तो अंत समय में जब उसे अपने कर्मों का लेखा देना होगा, तब भारी ग्लानि और मानसिक कष्ट का सामना करना पड़ेगा. यही 'खरी बिगूचनि' है, जिसका उल्लेख कबीर अपने दोहे में करते हैं.

भारतीय उपनिषदों में भी इसी सत्य को अत्यंत गहराई से समझाया गया है. कठोपनिषद में शरीर को रथ और बुद्धि को सारथी कहा गया है. आत्मा इस रथ की स्वामी है और इंद्रियाँ उसके घोड़े हैं. यदि बुद्धि विषय-वासनाओं की ओर मुड़ जाती है, तो यह रथ विनाश के मार्ग पर चला जाता है, लेकिन यदि बुद्धि संयमित और जागरूक हो, तो यही शरीर परम सत्य तक पहुँचने का साधन बन सकता है. कबीर जब कहते हैं **'तूं जिनि खोवै ख्वार'**, तो उनका संकेत इसी ओर है कि मनुष्य अपनी चेतना और ऊर्जा को व्यर्थ के भोगों में नष्ट न करे.

ईशावास्योपनिषद का प्रथम मंत्र कहता है — **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्.'** अर्थात इस संसार में जो कुछ भी है, वह ईश्वर का है, इसलिए त्याग और संतुलन के साथ उसका उपयोग करो. कबीर का 'साह की पूंजी' वाला विचार इसी उपनिषदिक चेतना का लोकभाषा में सरल रूप है. मनुष्य जब इस शरीर और संसार को अपना मानकर उसमें आसक्त हो जाता है, तब वह उस मूल सत्य को भूल जाता है कि वह केवल एक यात्री है, स्वामी नहीं.

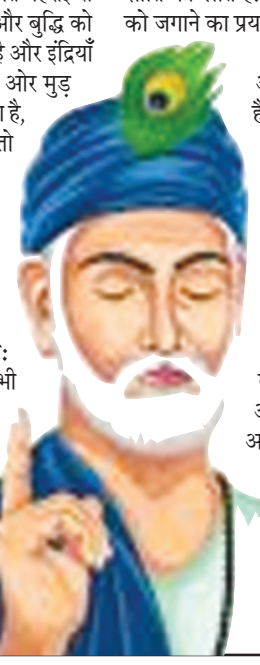

मुण्डकोपनिषद में दो पक्षियों का सुंदर रूपक मिलता है. एक पक्षी संसार के फलों का भोग करता है, जबकि दूसरा केवल साक्षी बनकर देखता है. आधुनिक मनुष्य भी आज उसी पहले पक्षी की तरह केवल भोग और उपभोग में उलझ गया है. वह अपने भीतर बैठे उस साक्षी, उस चेतना और उस आत्मा को पहचानना भूल गया है जो वास्तविक शांति का स्रोत है. कबीर का दोहा इसी विस्मृति से मनुष्य को जगाने का प्रयास करता है.

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि आत्मा न जन्म लेती है और न मरती है. शरीर केवल वस्त्र की तरह बदलता है. गीता के अनुसार यह शरीर एक 'क्षेत्र' है और आत्मा 'क्षेत्रज्ञ' अर्थात उसे जानने वाली सत्ता है. यदि मनुष्य अपने जीवन को केवल भोग-विलास और वासनाओं में समाप्त कर देता है, तो वह अपने भीतर स्थित उस अविनाशी सत्ता को कभी नहीं पहचान पाता. कबीर इसी भूल के प्रति सावधान करते हैं कि यह जीवन केवल खाने, कमाने और संग्रह करने के लिए नहीं मिला, बल्कि आत्मबोध और सदाचार के लिए मिला है.

सामवेद जीवन को संगीत और संतुलन का प्रतीक मानता है. मनुष्य के विचार, वाणी और कर्म जब संतुलित रहते हैं, तब जीवन मधुर बनता है. लेकिन जब मनुष्य केवल भौतिक इच्छाओं में डूब जाता है, तब उसका आंतरिक संगीत टूटने लगता है. आज तनाव, अवसाद और मानसिक अशांति उसी टूटे हुए संतुलन का परिणाम हैं. अथर्ववेद शरीर को देवताओं की नगरी कहता है और उसे संयम तथा शुद्धता से सुरक्षित रखने की प्रेरणा देता है. वर्तमान समय में असंतुलित जीवनशैली, नशा, जंक फूड और अत्यधिक मानसिक दबाव ने इस 'देवपुरी' को कमजोर कर दिया है. यह भी उसी पूंजी का क्षरण है जिसकी ओर कबीर संकेत करते हैं.

डिजिटल युग में कबीर का संदेश और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है. आज मनुष्य की सबसे बड़ी पूंजी उसका समय और उसकी एकाग्रता है, लेकिन वही समय अंतहीन स्क्रीन, सोशल मीडिया और दिखावटी जीवनशैली में नष्ट हो रहा है. मनुष्य बाहरी दुनिया से जुड़ता जा रहा है, लेकिन भीतर से खाली होता जा रहा है. क्षणिक मनोरंजन ने धैर्य छीन लिया है, तुलना ने संतोष समाप्त कर दिया है और लालसा ने मन की शांति को निगल लिया है. यही आधुनिक समय की 'खरी बिगूचनि' है.

कबीर का संदेश केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि जीवन प्रबंधन का गहरा दर्शन है. वे हमें याद दिलाते हैं कि मानव जीवन अत्यंत दुर्लभ अवसर है. यह पूंजी यदि सदाचार, सेवा, संयम, आत्मचिंतन और ईश्वर स्मरण में लगाई जाए, तो यही जीवन मुक्ति का मार्ग बन सकता है. लेकिन यदि इसे केवल भोग, क्रोध और अहंकार में नष्ट कर दिया गया, तो अंततः मनुष्य के हाथ केवल पछतावा ही आएगा. इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य अपनी कथनी और करनी में एकरूपता लाए, अपने समय और चेतना का सम्मान करे तथा इस दिव्य पूंजी को उस मार्ग पर लगाए, जो उसे भीतर से समृद्ध और शांत बना सके.

क्लास by बड़े भाई

अच्छाई का रिटर्न शानदार होता है

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई कैसे हैं आप ? विश्वास है आप सब अच्छे होंगे.. आज बड़ा शानदार विषय लेकर आया हूँ.. उनके लिए तो विशेष रूप से जो अच्छाई के काम में जुटे हैं लेकिन अच्छाई का फल न मिलने से निराश हैं..

छोटे भाई इसे समझाने के लिए एक किस्सा सुनाता हूँ आपको, किस्सा कुछ ऐसा है कि एक गाँव में एक रात भारी बारिश चल रही थी.. सब अपने अपने घरों में बैठे हुए बारिश निकलने की प्रार्थना कर रहे थे.. उसी गाँव में दो बहने जो एक दुसरे का सहारा थी.. उनका भी घर उस गाँव के एकांत में था.. उस रात एक आदमी ने दरवाजा खटखटाया.. बहनों ने दरवाजा खोला.. वो व्यक्ति बारिश में भीगा हुआ था.. उसने उनसे एक ग्लास पानी माँगा.. इन्होने उस व्यक्ति को पानी दिया.. फिर वो व्यक्ति रुका नही.. वो पानी पीकर चला गया.. फिर बारिश बंद हुई और इस बात को छः महीने बीत गये.. अचानक उन दोनों बहनों में से एक बहन की तबियत बिगड़ गयी.. जब उसे अस्पताल ले जाया गया तो वहां एक बड़ा ओपरेशन करने के लिए बोला.. जो बहुत मंहगा था.. उन्होंने अपना घर बेचकर ऑपरेशन का खर्च चुका देने का सोचकर हाँ कर दी.. ऑपरेशन सफल रहा.. उन्होंने ऑपरेशन का बिल माँगा कि कितना देना है.. लेकिन यहाँ कहानी अलग थी.. उन्हें ऑपरेशन बिल मिला जिसमें लिखा था.. यह पूरा बिल आपके उस रात के एक ग्लास पानी ने भर दिया है.. आप घर जाएँ.. दरअसल उस रात जिस व्यक्ति ने पानी माँगा था वो एक प्रसिद्ध डॉक्टर था और उसी ने उसका ऑपरेशन किया था..

बात समझ आ गयी होगी.. अच्छाई का रिटर्न ऐसा ही मिलता है.. इसलिए अच्छाई की कीमत, इससे फल की अपेशा नही करनी चाहिए क्योंकि वो आपको इतना देने वाली है जितना आपने सोचा न होगा और वो भी ऐसे समय पर जब आपकी मदद के सारे रास्ते बंद रहेंगे.. बस यही कहना था, धन्यवाद..

पुस्तक समीक्षा

अप्प दीपो भव :

दिलीप कुमार

यह पंक्ति का भावार्थ है स्वयं दीपक बनें. अर्थात् स्वयं अपने पथ को प्रकाशवान करें एवं दूसरों के पथ को भी प्रकाशवान करें.

यही सार है इस किताब का. लेखक श्री दिलीप कुमार ने छोटी-छोटी कहानियों से जीवन जीने की कला पर प्रकाश डाला है. कैसे आप प्रतिदिन छोटे-छोटे प्रयास कर अपने जीवन में खुशहाली ला सकते हैं. हर कहानी के माध्यम से जीवन में कितने परिवर्तन बहुत ही आसानी से किए जा सकते हैं, यह दर्शाया गया है. जैसे जाग मुसाफिर भोर भई, आज की प्लानिंग क्या है पार्टनर, बोया पेड़ बबूल का, आम कहां से खाय एवं अंत में अहम् ब्रम्हास्मि, अपना गुरु स्वयं बनें.

हर कहानी में क्या प्रयास आपको करने चाहिए, कैसे अपनी सोच एवं आचरण में सुधार करें, के लिए बहुत ही उपयोगी टिप्स भी दी गयी हैं. कैसे नई चुनौतियों का सामना करें, कैसे बाधाओं को पार करें आदि विषयों को बहुत ही सरल भाषा में समझाया गया है. कहानियों को ऐसे पंक्तिबद्ध किया है जैसे आप अपनी दिनचर्या करते हैं. उठ जाग मुसाफिर, मतलब जागने से शुरुआत की गयी है.

लेखक श्री दिलीप कुमार भारतीय रेल सेवा संवर्ग से हैं एवं लेखक, कवि एवं मोटिवेशनल स्पीकर हैं. सरकारी सेवा में आने से पहले 10 वर्ष पत्रकार रहे. उन्हें रेल मंत्रालय का मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार एवं बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा दीनानाथ शरण स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.

यह पुस्तक अभिधा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है एवं मूल्य रु. 150 है.
Email:
dilipk2809@gmail.com
एवं
abhidhapublication @gmail.com

भजन जैमिंग :

भक्ति का आधुनिक रूप या आडंबर

भक्ति भी अब एक ट्रेंड बनने लगी है – और 'भजन जैमिंग' उसका सबसे चर्चित उदाहरण बन चुका है.

आज के दौर में 'भजन जैमिंग' या 'भजन क्लब' युवाओं के बीच एक नया और बेहद लोकप्रिय चलन बन गया है. जिस तरह की दीवानगी आज की तारीख में भजन जैमिंग को लेकर दिखाई दे रही है, वैसी शायद बीते दशकों में युवाओं में भजन या भगवान के प्रति कभी देखने को नहीं मिली. आखिर क्या है यह भजन जैमिंग?

दरअसल, यह भी एक तरह की भजन संध्या ही है, बस इसका स्वरूप और परिवेश आधुनिक हो गया है. बड़े-बड़े होटल, शानदार सजावट, आकर्षक लाइटिंग और एक अलग अंदाज़ में युवा भजन गाते हैं. वहां मौजूद लोग भी संगीत और भक्ति में डूब जाते हैं. यह माहौल इतना प्रभावशाली होता है कि कई युवा पहली बार भजन और सनातन संस्कृति की ओर आकर्षित होते हैं.

आज लगभग हर महानगर में भजन जैमिंग के आयोजन हो रहे हैं. यहां तक कि हाल ही में अनंत अंबानी के भव्य जन्मदिन समारोह में भी इसका आयोजन किया गया. एक दृष्टि से देखें तो यह आज की युवा पीढ़ी को सनातन संस्कृति और अध्यात्म से जोड़ने का एक अच्छा माध्यम भी बन रहा है. लेकिन मेरी पीड़ा इस बात को लेकर है कि जिस भक्ति और संकीर्तन की परंपरा सदियों से हर गांव, हर घर और हर मंदिर में सहज रूप से जीवित थी, उसका भी अब आधुनिकीकरण और व्यावसायीकरण कर दिया गया है. जो भजन कभी मंदिरों की सादगी, श्रद्धा और आत्मिक शांति में गूंजते थे, आज वही बड़े होटलों और महंगे आयोजनों का हिस्सा बन गए हैं. पहले भजन मंडलियों में लोग बिना किसी दिखावे के केवल मन की शांति और भगवान के प्रेम में शामिल होते थे. वहां ना कोई ड्रेस कोड होता था, ना कैमरों की चमक, ना सोशल मीडिया पर दिखाने की होड़. बस एक सच्चा भाव होता था – भक्ति का, अपनत्व का और आत्मिक जुड़ाव का. विडंबना देखिए – घर के पास मंदिर में रोज़ होने वाले भजन-संकीर्तन में मुश्किल से पाँच-छह बुज़ुर्ग महिलाएं दिखाई देती हैं. वहां की सादगी, शांति और आत्मिक वातावरण से आज का युवा जुड़ नहीं पा रहा. यहां तक कि कई लोग तब तक भजन संध्या में नहीं जाते जब तक वहां चाय-नाश्ते की व्यवस्था न हो. वहीं दूसरी ओर, यही युवा भजन जैमिंग में हज़ारों रुपये खर्च करके, ड्रेस कोड फॉलो करके और सोशल मीडिया पर तस्वीरें साझा करके स्वयं को आध्यात्मिक दिखाने का प्रयास करते हैं. आज भक्ति भी कहीं न कहीं एक 'इवेंट' बनती जा रही है. कैमरों की फ्लैश, रील्स और स्टेटस अपडेट्स के बीच कभी-कभी वह सच्ची तल्लीनता खो जाती है, जो मंदिर के किसी शांत कोने में आंखें बंद कर बैठने से मिलती थी.

सुचिता सकुनिया

मुझे समझ नहीं आता कि 'जैमिंग' शब्द को भजन के साथ जोड़ना कितना उचित है. क्या भक्ति भी अब एक ट्रेंड और सोशल स्टेटस बनती जा रही है? हालांकि, यदि इस माध्यम से युवा भगवान और संस्कृति से जुड़ रहे हैं तो यह सकारात्मक बात है. लेकिन कहीं न कहीं यह भी सच है कि आज के समय में 'जो दिखता है, वही बिकता है.'

भजन होटल में हो या मंदिर में, यदि मन सच में भगवान से जुड़ जाए तो वही सबसे सुंदर संकीर्तन है. क्योंकि भक्ति का संबंध स्थान की भव्यता से नहीं, मन की सरलता और भाव की गहराई से होता है.

कविता

आईने

जयश्री भार्गव

सकरी सी गली के नुक्कड़ पर
उस पुरानी सी दुकान में
दो टूटे शीशे चिल-चिला रहे थे
अपने टूट कर बिखरने की कहानी
एक दूजे को सुना रहे थे

निहार रहे थे एक दूसरे के
हाथों की झुर्रियां और स्याह पड़ चुका चेहरा
गड्ढों में धंसी आँखें
एक दूसरे का प्रतिबिंब देख रही थी
मानो शिकायत कर रही हों
खुद से खुद को बर्बाद करने की

वो आईने बचपन से बुढ़ापे
तक की दास्तान सुना रहे थे
वो दो टूटे आईने
एक दूसरे को आइना दिखा रहे थे।

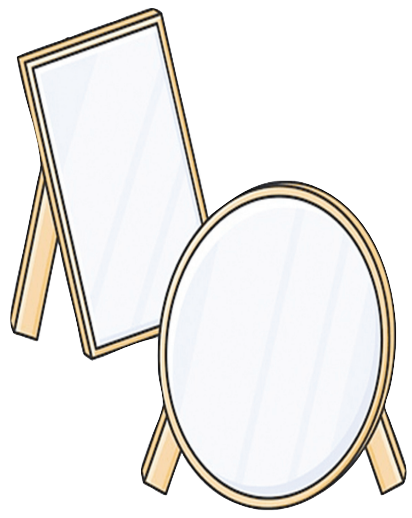

लघुकथाएं

डिस्टर्ब !

अशोक वाधवाणी

हम सब बुजुर्ग लोग रोज़ाना सुबह बगीचे में मिलते . घंटा-डेढ़ घंटा इधर-उधर की बातें करते. सामाजिक-धार्मिक-आर्थिक आदि विषयों पर दिल खोलकर बेबाक बातें होती . फ़िल्मों की गप-शप भी वर्जित नहीं होती.

एक सुबह हम सब लोग बगीचे में ज़मीन पर बैठकर हंसी-ठिठोली में मगन थे. जोरों से कहकहे-ठहाके लगा रहे थे, आत्माराम द्वारा सुनाए गए नये चुटकुले पर. उनके पास में अलग-अलग दो बेंचों पर 3-3 युवक बैठे थे. आपस में कोई बोलचाल नहीं. सभी स्मार्टफ़ोन पर नज़रें गाड़े, चैटिंग करने में व्यस्त थे. उन में से एक युवक ने गुस्से से तमतमाते हुए क्रोधपूर्ण स्वर में आत्माराम से कहा , 'यहां बैठकर इस तरह शोर-शराबा करना अच्छी बात नहीं है. हम सब लोग क्रडिस्टर्ब हो रहे हैं. धीमी आवाज़ में बोलिए या फिर किसी दूसरी जगह जाने का कष्ट करें तो बेहतर होगा.'

अब हम लोगों की निगाहें आत्माराम पर जाकर टिकी. वे समझ गए कि उस युवक को कोई तगड़ा जवाब देने के लिए सभी मौन इशारा कर रहे हैं. आत्माराम ने मुस्कुराते हुए उस युवक से प्रेमपूर्वक शब्दों में कहा , क्रबेटे , तुम सब लोग मोबाइल पर ही आंखें टिकाए बैठे हो. तुम्हें परेशानी क्यों हो रही है? तुम्हारे कहने का तात्पर्य यह है कि हम गार्डन की एकांत जगह छोड़कर, टिकट खरीदकर किसी सिनेमा हॉल में बैठकर बतियाएं.' आत्माराम का करारा कटाक्ष सुनने के बाद युवक का चेहरा फक से पीला पड़ गया.

वापसी का वक्त

✍ सुभाष चंद्र लखेड़ा

वे दोनों शहर में बेटे – बहू के पास आये थे. रामदीन की तो आने की कतई इच्छा नहीं थी लेकिन शहर आने के लिए श्यामा ने उसे मजबूर किया था . यूं वह अभी पिछले अनुभवों को भूला नहीं था लेकिन समय के मरहम ने शायद पिछले जख्मों के दर्द को कुछ कम कर दिया था. खैर, उसने श्यामा को समझा दिया था कि इस बार वह जब भी कहेगा, उसे उसके साथ गांव वापस आना पड़ेगा. जल्दी ही वह वक़्त भी आ गया. वह इस समय अपनी पत्नी श्यामा के साथ उस बस में बैठ चुका था जो उन्हें उनके गाँव पहुंचाएगी.

दरअसल, इस बार तो वापसी की बात वह तीसरे दिन से ही सोचने लगा था. चाय के लिए दूध नहीं बचा है – यह बात उसने बेटे – बहू को कल दिन में ही बता दी थी लेकिन दूध खुद तो चलकर आता नहीं; उसे तो पास के किसी बूथ से लाना पड़ता है. खैर, जब वह लाल रंग की चाय पी रहा था तो श्यामा ने उसे बताया कि आज सब्जी के नाम पर घर में सिर्फ आलू – प्याज है. अभी वह अपने बेटे रोहित को कुछ कहता कि तभी उसे अपनी बहू अर्चना की आवाज सुनाई दी – 'मम्मी, आज शाम को हम दोनों को किसी के यहाँ पार्टी में जाना है, आप अपने लिए कुछ बना लेना. ' दरअसल, रोहित और अर्चना, दोनों नौकरी करते हैं और उनके पास घर के छोटे – मोटे कामों के लिए वक़्त ही नहीं बचता – यह बात रामदीन जानता है. रामदीन सिर्फ इतना नहीं जानता कि आये दिन ये लोग अपना घर देखने के बजाय पार्टियों में क्यों जाते हैं ?

बहरहाल, पांचवे दिन रामदीन समझ गया की अब वापसी का वक़्त आ गया है. 'माँ, घर में आटा नहीं है. फ्रिज में पिज़ा और कुछ ब्रेड पीस होंगे, आज उन्हीं से काम चला लेना. दफ़्तर से वापस आते समय आटा लेते आऊंगा. ' रोहित ने घर से निकलते हुए अपनी माँ से कहा. उसी क्षण रामदीन ने तय कर लिया था कि वे कल बेटे – बहू को आशीर्वाद देकर गांव वापस चले जाएंगे.

माँ

अविनाश अग्निहोत्री

बच्ची को रश्मि से दूर हुए आज पूरे तीन दिन हो गए थे.पर अब भी रो रो कर उसका बुरा हाल था.

तब उसके पति ने उसे ढांढस बंधाते हुए कहा,अब उस नन्ही सी जान के दूर हो जाने का इतना भी क्या गम करना.

ये सब तो पहले से तय हुआ था कि हमें तय अनुबंध के अनुसार ये बच्चा तो उन्हें सौंपना ही था.

क्या तुम भूल गई रश्मि इस समझौते पर हम दोनों ने हस्ताक्षर भी किए थे.जिससे अब वो बच्ची हर लिहाज़ से उनकी ही है.

तो अब उसके लिए भला क्या दुख मनना.

मुझे सब कुछ याद है रोहित पर वो बच्ची हमारी पहली संतान है.जिससे अब हम इस जीवन में कभी नहीं मिल पाएंगे.

अरे पर वो समझौता तो एक मजबूर औरत ने किया था और आज जो रो रही है,वह तो एक मां है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी